32 PAGES ANSWER BOOK

विषय Subject: हिन्दी

विषय कोड Subject Code: 051

परीक्षा की दिनांक /Date of Exam: 020323

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper: हिन्दी

प्रश्न पत्र का सेट
Set of the Question paper: B

गोले भरने हेतु उदाहरण :-
सही तरीका :- ● ○ ○ ○
गलत तरीका :- ⊗ ⊘ ○ ◐ ◉ ○

नोट :-
इस शीट को भरने के पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए गए उदाहरण को देखें।

कार्यालय उपयोग के लिए

ID NO.
6046086
SUB.
051 - HINDI
Set. 1
Bag.
10511257

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

② [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

BSE

उत्तर क्रमांक (1)

उ. (1) (i) (अ) दत्ताजीराव के यहाँ

(ii) (ब) नाभिक

(iii) (स) शब्दालंकार

(iv) (अ) चार कालों में

(v) (द) कपड़े पहनाती हैं।

(vi) (स) पैसे की

उत्तर क्रमांक (2)

उ. (2) (i) लेखक।

(ii) नौ वर्ष की उम्र।

(iii) भूषण।

(iv) कागज के पन्ने से।

(v) बिड़ला मंदिर।

(vi) सरल वाक्य ।

(vii) मात्रिक ।

उत्तर क्रमांक (3)

उ.(3)

'क'		'ख'
(i) मस्ती का संदेश	-	(ब) हरिवंशराय बच्चन
(ii) चौपाई छंद	-	(अ) 16 मात्राएँ
(iii) चित्रकार	-	(द) चितेरा
(iv) सम्पादकीय पृष्ठ	-	(स) अखबार की अपनी आवाज़
(v) हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग	-	(ई) भक्तिकाल
(vi) छायावाद के प्रवर्तक कवि	-	(इ) जयशंकर प्रसाद

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (4)

(4) (i) पहलवान की ढोलक की।

(ii) जयशंकर प्रसाद।

(iii) लाल चॉक की खड़िया।

(iv) दोहा का।

(v) मुहावरा।

(vi) ध्वनि एवं संवादों।

(vii) खजूर व अंगूर।

BSE

उत्तर क्रमांक (5)

(5) (i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

(vi) असत्य

उत्तर क्रमांक (6)

उ०(6) कवित्त छंद ⇒ यह वर्णिक छंद होता है इसमें चार चरण होते हैं। इसमें कुल 31 वर्ण होते हैं तथा 16-15 वर्णों पर यति होती है अंत में वर्ण गुरु होता है।

उदाहरण ⇒ ऊँचे घोर मन्दर के अंदर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अंदर रहाती
कन्दमूल भोग करें, कन्दमूल भोग करें,
तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती हैं।

उत्तर क्रमांक (7)

उ(7) तकनीकी शब्द ⇒ ये वे शब्द होते हैं जिनका प्रयोग हम मुख्यतः किसी विषय की चर्चा करने में करते हैं इन्हें "पारिभाषिक शब्द" भी कहा जाता है। ये अंग्रेजी के शब्द "Technical" का हिन्दी पर्याय होते हैं।

उदाहरण ⇒ (i) भौतिकी के क्षेत्र में- गुरुत्वाकर्षण, वेग, त्वरण।

(ii) रसायन के क्षेत्र में- नाभिक, इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन।

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (8)

उ० (8) (i) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(ii) जंगल में शेर दहाड़ने लगा।

उत्तर क्रमांक (9)

उ० (9) 'छोटा मेरा खेत' नामक कविता में कवि "उमाशंकर जोशी" ने कवि कर्म की तुलना कृषि कर्म से की है। इसी तुलना में कवि ने अपने कागज के पन्ने रूपी खेत में शब्द बीज को बोया है।

उत्तर क्रमांक (10) (अथवा)

उ० (10) 'लक्ष्मण मूर्च्छा व राम विलाप' कविता में कवि "तुलसीदास" जी कहते हैं कि जब युद्ध करते समय लक्ष्मण को मेघनाद ने शक्ति प्रहार कर मूर्च्छित कर दिया था तब लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी बूटी लाने के लिए राम के प्रिय व सेवकोत्तम महाबली हनुमान जी गए

MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (11)

उ० (11) जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित 'बाजार दर्शन' में लेखक जैनेन्द्र जी ने कहा है कि जब जेब भरी होती है और मन खाली होता है तो बाजार का जाइ खूब चलता है। इस स्थिति में व्यक्ति बाजार के बाजारूपन को और भी बढ़ा देते हैं। बाजार की सार्थकता (कृतार्थता) नहीं समझते।

उत्तर क्रमांक (12) (अथवा)

उ० (12) प्रसिद्ध निबंध 'स्मृति की रेखाएं' से उद्धृत 'भक्तिन' नामक पाठ में इसकी रचयिता महादेवी वर्मा ने स्वयं एवं भक्तिन के मध्य के संबंध को मालकिन व नौकरानी के संबंध से नकारा है और दोनों के बीच के संबंध को स्वामी-सेवक का बताया है। तथा भक्तिन की तुलना सेवक धर्म में हनुमान से की है।

उत्तर क्रमांक (13) (अथवा)

उ० (13) मोहनजोदड़ो के घरों की विशेषताएँ ⇒

(i) सड़कें समकोण पर काटती थीं।
(ii) ढकी हुई नालियां सड़कों के किनारे थीं।
(iii) सामूहिक स्नानागार व हर घर में स्नानागार थी।
(iv) पानी व पशुपालन था।
(v) उचित सुनियोजित नगर योजना की व्यवस्था थी।

कुल अंक

MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (14)

उ० (14) अप्रत्याशित लेखन वे लेखन होते हैं जिनके "आने की आशा न हो" नए विषयों के लेखन से छात्रों में निम्न गुण विकसित होते हैं–

(i) छात्र की कल्पना करने की शक्ति बढ़ जाती है।

(ii) छात्र की रचनात्मकता भी बढ़ती है।

(iii) छात्र की बुद्धि लब्धि (IQ) भी बढ़ती है।

(iv) लेख लिखने की क्षमता भी अच्छी हो जाती है।

उत्तर क्रमांक (15)

उ० (15) वीर रस ⇒

सहृदय के हृदय में "उत्साह" नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव व संचारी भाव से संयोग करता है तब वीर रस की ~~उत्तपत्ति~~ उत्पत्ति होती है।

उदाहरण ⇒ " सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

न क्र.

उत्तर क्रमांक (16) (अथवा)

उ० (16)

क्रिकेट के खेल पर दो मित्रों के बीच संवाद ⇒

राम :- सुनो मोहन ! ।
मोहन :- हाँ भाई, बोलो ।
राम :- क्रिकेट खेलते हो ?
मोहन :- हाँ भाई, बहुत ।
राम :- तो फिर आ जाना शाम को ।
मोहन :- कहाँ ?
राम :- अपने विद्यालय में ही ।
मोहन :- क्या प्रधानाचार्य से पूछा ?
राम :- हाँ, हम सभी रोज यहीं खेलते हैं
मोहन :- सब ? कौन !
राम :- मैं और मेरे 5 साथी ।
मोहन :- अच्छा, ठीक है, मैं भी आऊँगा ।
राम :- ठीक है ।
मोहन :- क्या मैं अपने साथियों को ला सकता हूं ?
राम :- ठीक है, ले आना ।
मोहन :- धन्यवाद !
राम :- ठीक है, शाम को चार बजे मिलते हैं फिर ।
मोहन :- ठीक है ।
राम :- आज तो मजा आएगा ।
मोहन :- हाँ भाई ।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (17) (अथवा)

उ० (17)

हास्य-व्यंग्य एक _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ हम हँसना सीखें।

(क) हँसना : जीवन जीने की कला।

(ख) नीरस जीवन को "हास्य-व्यंग्य" सुखद बना देता है।

(ग) सार ⇒ इस गद्यांश का सार यही है कि जीवन में चाहे कितनी भी समस्याएं व विपत्ति हो हमें हमेशा मुस्काराते हुए, हँसते हुए रहना चाहिए क्योंकि संघर्ष, तनाव, घुटन से बचने के लिए आवश्यक है कि हम हँसना सीखें।

B
S
E

योग पूर्व पृ०
MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (18)

उ० (18)

हरिवंशराय बच्चन (1907-2003)

(i) दो रचनाएं ⇒ मधुबाला, मधुशाला, मधु कलश, निशा-निमंत्रण इत्यादि।

(ii) भाव पक्ष ⇒ वैसे तो हरिवंशराय बच्चन जी हालावादी कवि के रूप में विख्यात हैं किंतु इनकी रचनाओं में रहस्यवादी भावना देखने को मिलती है। छायावादी कवि होने के कारण रचनाओं में रहस्यवाद का होना स्वभाविक है ये निराश व हताश व्यक्ति के लिए भी प्रेरणा का संबल प्रदान करते हैं जैसे कि-

"लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती"

कला पक्ष ⇒ हरिवंशराय बच्चन जी की कविताओं की भाषा सीधी-सादी व शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। इन्होंने अपनी रचनाओं में प्रांजल शैली का प्रयोग किया है तथा साथ ही मे इनकी रचनाओं में शब्दालंकार व अर्थालंकार का भी प्रयोग हुआ है। और मुक्तकों व उपमा रूपक, उत्प्रेक्षा, पदमैत्री, स्वरमैत्री, संदेह, विरोधाभास आदि अलंकारों से पूर्ण है।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(iii) साहित्य मे स्थान ⇒ बच्चन जी हिंदी साहित्य के 'हालावाद' के प्रवर्तक हैं तथा शुष्क एवं नीरस विषयों को भी सरस ढंग से प्रस्तुत करने मे सिद्धहस्त हैं तथा इन जैसे महान कवि कई सदियों मैं जन्म लेते हैं। इनका स्थान हिंदी साहित्य मे सदैव अद्वितीय रहेगा तथा हिंदी साहित्य आपकी दी हुई रचनाओं के लिए सदैव आपका ऋणी रहेगा।

B
S
E

उत्तर क्रमांक (19)

धर्मवीर भारती

(i) दो रचनाएँ ⇒ सूरज का सातवाँ घोड़ा, गुनाहों का देवता, अन्धायुग (रेडियो नाटक), ठण्डा लोहा ।

(ii) भाषा ⇒ धर्मवीर भारती जी की रचनाएं सीधी सरल व शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली युक्त हैं. इनकी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम, विदेशी, तद्भव देखने को मिलते हैं इन्होंने कहीं-कहीं अपनी रचनाओं में मुहावरा-लोकोक्ति का उचित प्रयोग किया है जिससे इनकी रचनाओं में रोचकता बढ़ जाती है मुक्तक छंद का उपयोग किया है व उपमा, पदमैत्री, स्वरमैत्री अलंकारों के दर्शन हुए हैं।

शैली ⇒ इनकी रचनाओं में मुख्यतः भावात्मक, क्रियात्मक आलोचनात्मक, संस्मरणात्मक, विवरणात्मक, व चित्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

साहित्य में स्थान ⇒

धर्मवीर भारती का हिन्दी साहित्य की कवियों ~~कवियित्रियों~~ में सर्वोच्च स्थान है। इनका रेडियो नाटक (अन्धायुग) हिंदी गद्य विधा की अनुपम कृति है तथा संस्मरण के क्षेत्र में भारती जी सदैव याद रखे जायेंगे।

BSE

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (20) (अथवा)

30 (20)

– अनौपचारिक पत्र –

69, श्रीराम कालोनी
इंदौर (मध्यप्रदेश)
दिनांक – 02/03/23

आदरणीय पिताजी,
सादर चरण स्पर्श,

आपका पत्र प्राप्त हुआ आपने मुझसे मेरी परीक्षा के संबंध में जानकारी पूछी थी मैं आपको अत्यंत हर्ष के साथ बताना चाहता हूँ कि मैंने इस वर्ष सभी विषय तैयार कर लिए हैं। 20 तारीख से वार्षिक परीक्षाएँ हैं और मैं इनके लिए बहुत परिश्रम कर रहा हूं किंतु विज्ञान व गणित में के कुछ अध्यायों में कठिनाई आ रही है किंतु फिर भी मैं उन अध्यायों को संबंधित शिक्षकों से समझ रहा हूं। अभी 17 दिन शेष हैं मैं आपको आश्वासन देता हूं कि मैं अच्छे अंकों से प्रथमी श्रेणी से उत्तीर्ण हूंगा। माता – पिता को चरण – स्पर्श व छोटू को ढेर सारा प्यार।

आपका आज्ञाकारी
पुत्र
नाम – रितिन

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (21)

(i) पर्यावरण की सुरक्षा

रूपरेखा ⇒
(i) प्रस्तावना
(ii) पर्यावरण का अर्थ
(iii) पर्यावरण का प्रदूषण
(iv) पर्यावरण का बचाव
(v) उपसंहार

(i) प्रस्तावना ⇒

हम सभी जानते हैं कि हम सौरमंडल एकलौते ऐसे ग्रह में रहते हैं जहां वायुमण्डल तथा जल भी है ऐसे स्थान पर 'पर्यावरण' भी होता है जो हमें जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में प्रभावित करता है।

"पर्यावरण की सुरक्षा हमारा केवल धर्म ही नहीं अपितु कर्तव्य भी है"

(ii) पर्यावरण का अर्थ ⇒

'पर्यावरण' शब्द 'परि' व 'आवरण' दो शब्दों से मिलकर बना है। ~~जिसका अर्थ होता है~~ परि का अर्थ चारों ओर व आवरण का अर्थ हमे घेरे हुए है अतः ~~ऐसे~~ ऐसा आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है पर्यावरण कहलाता है। यही पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है।

B
S
E

प्रश्न क्र.

(iii) पर्यावरण का प्रदूषण ⇒

पर्यावरण में प्रदूषण के कई प्रकार होते हैं जैसे - जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण।

पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के (वायु, जल, अग्नि, पेड़) आदि के असंतुलित होने से पर्यावरण प्रदूषण होता है जब वायु में गैसों का संतुलन बिगड़ जाता जाता है तथा जल में कूड़ा-कचरा मिल जाता है साथ ही में उच्च ध्वनि से भी पर्यावरण प्रदूषित होता है।

BSE

(iv) पर्यावरण का बचाव ⇒

पर्यावरण का बचाव हम निम्न तरीकों से कर सकते हैं-

(i) जल को स्वच्छ बनाकर
(ii) पेड़ों को काटने से रोककर
(iii) सामाजिक जागरूकता फैलाकर
(iv) वाहनों का उपयोग कम करके
(v) लाउड-स्पीकर व डी.जे. का वोल्युम कम करके।
(vi) प्राकृतिक खाद का उपयोग करके।

(v) उपसंहार ⇒ पर्यावरण प्रदूषण आज एक वैश्विक समस्या बन चुकी है इससे निपटने के लिए लगातार प्रयास करते रहना चाहिए तथा पर्यावरण की सुरक्षा होनी चाहिए क्योंकि-

"जब पानी बिकना शुरू हुआ था तब हमने मजाक समझा था अब हवा भी बिकना शुरू हो गयी है। इसे मजाक न समझें पर्यावरण का बचाव करें"

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (22)

उ.(22)

संकेत ⇒ सबसे तेज बौछारें गयीं ---------- बच्चों के झुंड को।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' के में संकलित कविता 'पतंग' से उद्धृत है तथा इसके रचयिता 'आलोक धन्वा' हैं।

प्रसंग ⇒ कवि प्रस्तुत पद्यांश में ~~ऋतु~~ ऋतु परिवर्तन का सुंदर चित्रण कर रहे हैं।

व्याख्या ⇒ कवि उपर्युक्त पंक्तियों में कहता है कि सबसे तेज बौछारों वाला महीना भादों बीत चुका है तथा सुंदर सवेरा हुआ है कवि कहता है कि सूर्य की तुलना वह खरगोश की लाल आँखों से करता है तथा यह बताता है शरद ऋतु पुलों को पार करते हुए नयी व सुंदर साइकिल को तेज चलाते हुए आ रहा है। वह कहता है कि शरद ऋतु साइकिल की घण्टी ~~बज~~ बजाते हुए आ रही है। साथ ही मे यह परिवर्तन होने से मतलब नयी ऋतु शरद के आने से बच्चे अपनी रंग-बिरंगी व दुनिया की सबसे हल्की वस्तु को लेकर छतों पर पहुंच गए हैं व ऋतु परिवर्तन की इस श्रृंखला में और भी उपमाओं का प्रयोग किया है।

सौंदर्य बोध ⇒ (i) चमकीली साइकिल में विशेषण है।
(ii) पुलों को पार में अनुप्रास अलंकार है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्रमांक (23)

उ० (23) संकेत ⇒ एक बार वह ---------- चुनौती दे दी

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' के 'पहलवान की ~~ढोल~~ ढोलक' नामक पाठ से लिया गया है जिसके रचयिता "फणीश्वर नाथ रेणु" जी हैं।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने लुट्टन सिंह के द्वारा दंगल में हुई घटनाओं का चित्रण किया है।

B
S
E

व्याख्या ⇒ प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने उन घटनाओं को जो दंगल में हुई उनका वर्णन किया है जब लुट्टन सिंह पहलवान दंगल देखने श्यामनगर गया तब दंगल में हो रही कुश्ती और दांव-पेंच को देखकर उससे सब्र नहीं हो रहा था बस उसकी जवानी का जोश व ढोल की ललकारती हुई आवाज ने मानों उसे विवश कर दिया कि वह दंगल में भाग ले। क्योंकि वह पहलवान ढोलक को ही अपना गुरु मानता था। उसी समय मेले में 'शेर के बच्चे' नाम से प्रसिद्ध चाँद सिंह अपने गुरु बादल सिंह के साथ आया था अपनी जवानी की फुर्ती व जोश के कारण उसने शेर के बच्चे को चुनौती दे दी थी और अंत में उसे हरा भी दिया था।

योग पूव पृ०

मध्यप्रदेश
BHOPAL MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

विशेष ⇒ (i) दाँव-पेंच में शब्दयुग्म है।
(ii) सोचे-समझे में सजातीय शब्दयुग्म है।
(iii) पहलवान का जोश व उसकी योग्यता दर्शायी गयी है।

B
S
E